टिप्पणी

2

प्राचीन काल में सेनाएं

पिछले पाठ में आपने पढ़ा प्राचीन भारत में समाज का निर्माण कैसे हुआ। आपने यह भी जाना कि सेना और युद्ध के हथियारों की आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई। जनपद की संकल्पना को महाजनपद तक विस्तारित किया गया था। महाजनपद से तात्पर्य था कि राजा ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए पड़ोसी राज्य पर विजय प्राप्त की। इसके साथ ही भारतवर्ष का विचार आया। नियमित सेनाएं बनाई गईं। युद्ध के नियम और योद्धा कोड लिखे गए। योद्धाओं को सम्मान दिया जाता था तथा समाज में उन्हें उच्च स्थान प्राप्त था।

प्रस्तुत पाठ में हम यह पढ़ेंगे कि सेनाओं को युद्ध के लिए कैसे संगठित किया गया था। विशाल सेनाओं में युद्ध करने वाले बलों की दक्षता को बनाए रखने के लिए संगठन को नियंत्रित रखने एवं रैंक संरचना की आवश्यकता होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात आप:-

- सेना के संगठन की पहचान रथ, हाथी, घुड़सवार, पैदल सेना जैसे विभिन्न समूहों के रूप में कर सकेंगे;
- नियमित सेना तथा भाड़े की सेना में अंतर कर सकेंगे;
- रणनीति तथा युद्ध नीति में अंतर कर पाएंगे;
- नौसेना एवं युद्ध के पहलुओं का प्राचीन इतिहास के अनुसार संक्षेप में वर्णन कर सकेंगे।

2.1 सेना का संगठन

- हमारे पूर्वजों ने दो शब्दों का प्रयोग किया- नियमित सेना और विशिष्ट सेना। इन दोनों शब्दों में क्या अंतर है? नियमित सेना उन सैनिकों का समूह हैं जो अपने देश और देशवासियों की रक्षा के लिए पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से अपने दायित्व का निर्वाह

करते हैं। विशिष्ट सेना का अर्थ एक कुशल युद्ध संगठन है। एक ऐसी सेना जो भलीभांति प्रशिक्षित है और सदैव युद्ध के लिए तैयार रहती है।

- विश्व की सभी सेनाओं को हर प्रकार की भूमि पर युद्ध लड़ने के लिए तैयार रहना होता है और वे आवश्यक हथियारों से सुसज्जित भी होती हैं। भारत एक विशाल देश है। भारत में विभिन्न प्रकार के क्षेत्र हैं, जैसे- पहाड़, रेगिस्तान, मैदानी प्रदेश और जंगल आदि। सेना को विभिन्न प्रादेशिक स्थलों की यात्रा करनी पड़ती थी। रथ, तलवारबाज और पैदल सेना ने सैन्य शक्ति का विकास किया। प्राचीन काल में रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सैनिक सेना के भाग थे। सामूहिक रूप से इन्हें चतुरंगबल कहते थे।

- चतुरंगबल एक पारंपरिक सेना थी एक राजा के पास कई रथ, घोड़े और हाथी होते थे। इन सभी की देखभाल के लिए एक मंत्रालय की आवश्यकता होती थी। सेना की देखभाल, जानवरों के भोजन सैनिकों के वेतन तथा उनके रहन-सहन के लिए धन की आवश्यकता होती थी। इस प्रकार के खर्चे के नियत्रंण के लिए नए मंत्रालय की स्थापना की गयी। इस मंत्रालय का नाम मंत्र अथवा मंत्रणा परिषद और कार्य कोष अर्थात् धनकोष पर नियंत्रण करना था। इस प्रकार यह सेना छः इकाईयों में विभाजित हो गयी। सामाजिक संरचना के विकास और विभिन्न स्थानों पर कार्य करने के कारण सेना मजबूत हो गयी। ये छः इकाईयाँ थीं- जासूस, रसद अधिकारी, यातायात अधिकारी, नौसेना, दसिका और सलाहकार।

- **रथ / सारथीः** वैदिक काल में रथ, युद्ध लड़ने का एक बड़ा साधन था। युद्ध के मैदान में रथ ऐसे स्थानों पर खड़े किये जाते थे जिससे युद्ध में सेना को फायदा मिले। साथ ही रथ व्यूह रचना को अभेद्य बनाते थे। रथों का प्रयोग पीछे से आक्रमण करने के लिए भी होता था। हर रथ पर एक सारथी होता था। एक झंडे को सजाकर ध्वज बनाया जाता था। रथ में एक सारथी और एक योद्धा को बिठाया जाता था 650 ईसवी आते-आते रथ का प्रयोग कम होने लगा और इस सदी के अंतिम वर्षों में रथ का कोई जिक्र नहीं मिलता है।

- **हाथीः** युद्ध में हाथी बहुत महत्वपूर्ण होते थे। शांति के दिनों में हाथी एक वाहन के रूप में मनुष्य और सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करते थे। युद्ध में हाथी का उपयोग युद्ध सैनिक के रूप में होता था। ऋग्वेद में हाथियों के इस प्रकार के उपयोग की जानकारी मिलती है। हाथी के इस रूप का वर्णन अर्थशास्त्र में भी मिलता है। हाथियों की सुरक्षा के लिए एक विशेष अधिकारी की भी नियुक्ति होती थी। इस अफसर का कार्य जंगल में रहकर हाथियों को प्रशिक्षण देना व उनका ध्यान रखना होता था। हाथियों का युद्ध में बहुत महत्वपूर्ण कार्य होता था। गज शिक्षा और हस्तिशास्त्र से हमें इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। यह एक विशेष विज्ञान है जिसका केन्द्र बिन्दु हाथी है। साथ ही यह सैन्य शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण अंग है।

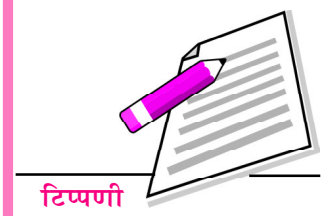

- **घुड़सवार सेना:** यह सेना का तीसरा प्रमुख अंग है। अर्थशास्त्र में हमें घुड़सवार तलवारबाज सैनिकों की जानकारी प्राप्त होती है। एक निरीक्षक की नियुक्ति होती थी जो घोड़ों के रखरखाव के लिए उत्तरदायी था। घुड़सवार सेना में सबसे तेज चलने वाला बल है और युद्ध में आश्चर्यजनक रूप से कार्य करता है।
- **पैदल सेना:** पैदल सेना, सेना का एक महत्वपूर्ण भाग है। पैदल सेना से सेना के संख्या बल में वृद्धि होती है। पैदल सेना युद्ध जीतने में महत्वपूर्ण कार्य करती है। अर्थशास्त्र में पैदल सेना को सेना का एक अलग हिस्सा माना गया है। यह सेना राज्यों के विशिष्ट अफसरों के अधीन कार्य करती है। पैदल सैनिक अपने पास तलवार और खंजर रखते हैं। साथ ही इनके हाथों में ढाल होती है। इनके हाथों में तीर कमान व भाले भी होते हैं।
- **रसद अधिकारी:** सेना का विभाजन चतुरंगबल या चार भागों में विभाजित किया गया है। इन चार भागों को बाद में आठ भागों में विभाजित किया गया। विभाजन की इन इकाईयों में रसद अधिकारी और नौसेना प्रमुखों को भी रखा गया। रसद अधिकारी का वर्णन महाभारत में भी देखने को मिलता है। यह संगठन सेना को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए कार्य करता है। सेना को युद्ध में अतिरिक्त हथियार भेजना, राशन सामग्री का ध्यान रखना तथा सेना के कार्य में मदद करना, इस विभाग के कार्य हैं। यह विभाग चिकित्सा तथा हथियारों की मरम्मत का भी कार्य करता है।
- **नौ सेना:** वैदिक काल से लोग जहाज और नाव का प्रयोग करते हैं। परन्तु नौ सेना का एक विशेष विभाग बनाना और युद्ध की स्थिति में नौसेना को मार्गदर्शन देने का काम चाणक्य ने किया। जहाजों के बारे में हम ऋग्वेद, धर्मशास्त्र और पुराणों में पढ़ सकते हैं। भारत के पूर्वी तट के नागरिक और तमिल लोग जहाजों का प्रयोग वैदिक काल से कर रहे थे। ये जहाज का प्रयोग व्यापार और आसपास के देशों को जीतने के लिए करते थे। इस काल में तीन तरह के युद्ध पोतों का वर्णन मिलता है। प्रथम वे जहाज जिनका प्रयोग सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने के लिए होता था। दूसरे वह जो राजा, कोष और जानवरों को ले जाते थे तथा तीसरे प्रकार के जहाज दूरस्थ स्थानों तथा समुद्री लड़ाई के लिए होते थे।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. सेना के तीन भागों के नाम लिखिए।
2. नियमित सेना का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2.2 नियमित सेना तथा भाड़े की सेना

नियमित सेना की मूल विशेषता उसके सैनिक हैं। सैनिक ही इस प्रकार की सेना के आधार हैं। हम एक अच्छी सेना को निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर जान सकते हैं-

- **नियमित सेना:** नियमित सेना में वे सैनिक आते हैं जो स्वेच्छा से अपने देश की सेवा करते हैं। इनकी नियुक्ति अलग-अलग प्रदेशों से होती है। आधुनिक भारतीय सेना में हर राज्य से सैनिक भर्ती किए जाते हैं। उदाहरण- पंजाब, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु आदि।
- **भाड़े की सेना:** यह सेना अस्थायी होती है। इसका एक विशेष उद्देश्य होता है और उद्देश्य पूरा होने पर यह सेना रद्द कर दी जाती है। ये सैनिक, धन लाभ के लिए लड़ते हैं। इनमें अभिप्रेरणा की कमी होती है। नियमित सेना की तुलना में ये कम प्रशिक्षित, कम अभिप्रेरित और कम अनुशासित होती हैं।
- प्रश्न यह उठता है कि एक सैनिक कितना प्रशिक्षित है? प्रशिक्षित सैनिक युद्ध कौशल में माहिर होते हैं। उनमें आत्म विश्वास होता है और वे जानते हैं कि ये कार्य हम अच्छे से कर पाएंगे। अच्छी प्रशिक्षित सेना राजा का विश्वास जीतने में सफल रहती है। यह सेना राजा के प्रति स्वामी भक्ति का भाव रखती है। यह सेना अभिप्रेरित रूप से युद्ध में अस्त्र व शस्त्र चला सकती है।
- सेना का संगठन कैसा है तथा कितनी अनुशासित है प्राचीन भारत के वर्ण व्यवस्था के अनुसार क्षत्रिय सबसे बड़े युद्ध नायक होते थे। किसी और वर्ण के व्यक्ति भी सेना का भाग हो सकते थे। कौटिल्य के अनुसार एक सैन्य टुकड़ी में यदि एक ही क्षेत्र और जाति के व्यक्ति होंगे तो वह टुकड़ी सर्वश्रेष्ठ होगी। शुक्रनीति ने भी अच्छी सेना की विशेषता बताई है। थिरुवल्लुवर ने ठिरूकुराल नामक पुस्तक में रीति-रिवाज, बहादुरी और एकरूपता को सेना का प्रमुख गुण बताया है। तंजोर शिलालेख एक प्रमाणिक स्त्रोत है। इस शिलालेख में चोल सेना की 31 रेजिमेंट (टुकड़ी); जो कि नियमित सेना थी, का जिक्र मिलता है। यह भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि हर टुकड़ी को एक विशेष कार्य दिया जाता था जैसे मंदिर की सुरक्षा करना या मंदिर में संगीत बजाना। आज भी सेना में ऐसी टुकड़ी होती हैं जिन्हें राष्ट्र निर्माण के अन्य कार्य करने होते हैं जैसे हरित क्रांति, सड़कें व पुल का निर्माण इत्यादि।
- **सेना का निर्माण:** इस्तेमाल किए गए अस्त्र तथा युद्ध में उनके योगदान व कार्यशैली पर आधारित होती हैं। प्राचीन काल में एक मूल टुकड़ी को पट्टी कहा जाता था जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और तीन पैदल सैनिक शामिल होते थे। यह सेना की सबसे छोटी टुकड़ी होती थी। एक टुकड़ी दूसरी टुकड़ी के साथ सामंजस्य बिठाती थी। उदाहरण के लिए तीन पैदल सैनिक हाथी को सुरक्षा प्रदान करते थे। तीन घोड़ों का कार्य विरोधियों को ढूंढ़ना होता था। छोटी-छोटी टुकड़ियों को मिलाकर विशाल सेना का निर्माण किया जाता था। इस प्रकार की सबसे बड़ी टुकड़ी को अक्षुणी कहा जाता था और यह पूरी सेना का प्रतिनिधित्व करती थी। बड़ी सेनाओं में काफी संख्या में रथ, हाथी और

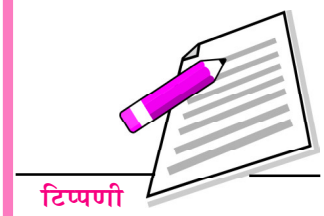

पैदल सैनिक होते थे। एक सुसंगठित सेना मिलकर युद्ध लड़ती थी और यही एक अच्छी सेना की पहचान थी।

2.3 युद्ध में रण कौशल और व्यूह रचना

केवल अच्छी सेना होना ही जीत का पर्याय नहीं होती अपितु एक अच्छी सेना के लिए व्यूह रचना और रण कौशल अति आवश्यक है। रण कौशल से तात्पर्य है निश्चित अभ्यास से युद्ध अस्त्रों का सटीक व बुद्धि बल प्रयोग करके शत्रु सेना को नष्ट करना।

व्यूह रचना से तात्पर्य राजा के सभी संसाधनों का प्रयोग करना। यह उपयोग शांति और युद्ध दोनों समय में हो सकता है और इसका लक्ष्य है केवल युद्ध जीतना। युद्ध की योजना बनाने के लिए अच्छा रण कौशल होना आवश्यक है। किन्तु युद्ध के मैदान में अच्छी व्यूह रचना कार्य करती है। प्रश्न यह उठता है कि प्राचीन भारतीय सेना में किस प्रकार के रण कौशल और व्यूह रचना का प्रयोग किया जाता था।

युद्ध प्रारंभ होने से पहले राजा तथा सेना अनेक कार्य करते थी। इन कार्यों का लिखित प्रमाण सेना के अभिलेखों में मिलता है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

(क) मार्च करना- सेना एक स्थान से दूसरे स्थान पर मार्च करती थी। युद्ध प्रारंभ होने से पहले उन्हें युद्ध स्थल पर पहुंचकर तम्बू लगाना होता था। मार्च करने हेतु व्यूह रचना का निर्माण होता था जिनमें कार्य स्थल तक पहुंचने के लिए रास्ते का चयन करना, आक्रमणकारियों से रक्षा करना, मौसम और जलवायु की जानकारी लेना, सेना को कितनी दूर तक जाना है इत्यादि तय करना होता था। इसी आधार पर रास्ते का निरीक्षण किया जाता था। इसी से तम्बू लगाने के स्थलों का चयन होता था। युद्ध स्थल का भौगोलिक परिवेश जैसे भूमि, प्रदेश, स्थानीय कृषि एवं अन्य संसाधन ही सेना के भोजन तथा रहने में सहायक होते थे मार्च में सैनिक एक-दूसरे के पीछे एक लाइन में चलते थे। भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर सेना का मार्च तय होता था। प्रशिक्षण के समय भी सैनिक को इस तरह का प्रशिक्षण कई स्थानों पर दिया जाता था जैसे नदी पार करना या पहाड़ों पर चढ़ना। इस प्रकार के प्रशिक्षण से सेना विरोधियों पर निकट से आक्रमण कर आश्चर्य चकित कर सकती थी। अग्नि पुराण में अनेक प्रकार के मार्चो की व्याख्या की गयी है और यह ग्रंथ संस्कृत भाषा में है।

(ख) शिविर लगाना: व्यूह रचना का अगला मुख्य पड़ाव शिविर लगाने की जगह चुनना था। यहां सैनिक लंबी यात्रा के बाद कुछ देर आराम करते थे। यह शिविर पूरी सेना के लिए होना चाहिए। यह स्थान सूखा तथा सीधा सपाट होना चाहिए ताकि जानवर, रथ आदि आराम से आ जा सकें। शिविर का स्थान सभी दिशाओं से पूर्ण सुरक्षित होना चाहिए। शिविर स्थल के निकट नदी या तालाब का होना भी आवश्यक था। शिविर स्थल आराम करने के साथ-साथ घायल सैनिकों की चिकित्सा और इकाईयों का पुर्नभरण भी करते थे।

(ग) **युद्ध स्थल का चयन करना:** युद्ध स्थल का चयन रथ, तलवारबाजों, घोड़ों और हाथियों को अपने गंतव्य स्थल पर पहुँचने में आसानी के आधार पर होता था। यह मैदान दलदला नहीं होना चाहिए। गीला होने से कीचड़ में रथ के पहिए फंस सकते थे। युद्ध का मैदान एक बड़ा क्षेत्र होना चाहिए। जिससे नरम मिट्टी होने के कारण सेना विरोधियों पर अपनी व्यूह रचना और घेर कर हमला करने की नीति का प्रयोग कर सके। स्थान चुनने में अपनी सेना को विभिन्न रूपों जैसे तीर, अर्द्धचन्द्राकार अथवा अन्य रूपों में सजाने के लिए पर्याप्त स्थान की उपलब्धता को ध्यान में रखा जाता था।

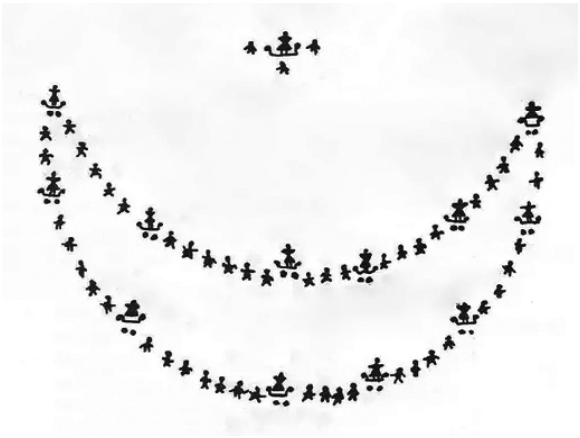

चित्र 2.1 : अर्द्धचंद्राकर रचना

युद्ध कौशल ऐसे तरीके हैं जिसे सेना युद्ध के मैदान में प्रयोग करती है। उपरोक्त चित्र में सेना यह सोच रखती है कि विरोधी बीच में हमला करेगा। इस प्रकार की रचना से विरोधी दल चारों ओर से घिर जाता था। इस प्रकार की व्यूह रचना बनाकर शत्रु को ध्वस्त करने का काम सेना करती थी। इसे ही युद्ध की व्यूह रचना कहते थे। इस तरह हमले करने हेतु गति, घेरना, आदि का प्रयोग होता था। इस प्रकार के हमले से बचने हेतु सेना अनेक व्यूह रचनाओं का निर्माण करती थी। इसमें से एक रचना को उपरोक्त चित्र में दिया है। इसको रक्षा करने की व्यूह रचना कहा जाता है।

2.4 नौसेना युद्ध

नौसेना की उत्पत्ति तथा नौसेना अध्यक्ष के पद के सृजन के बारे में जानकारी कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलती है। जिसमें जहाजों, नावों तथा उनके रूपों के बारे में लिखा गया है। वैदिक काल में भी जहाजों का प्रयोग व्यवसायिक रूप में होता था। इस प्रकार का उपयोग दक्षिण भारत के सम्राट भी करते थे। प्राचीन तमिल लोग जहाजों को यात्रा तथा विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया में विजय के लिए प्रयोग करते थे। दक्षिण भारतीय राजाओं ने अपने राज्य के विस्तार हेतु जहाजों में लंका, इंडोनेशिया, मलेशिया और बर्मा गए। चोल, पंड्या, पल्लव, चेर और चालुक्यों के पास एक बड़ा जहाजी बेड़ा था।

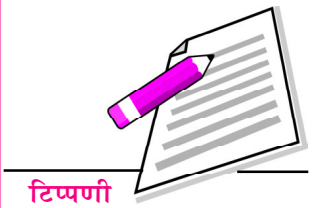

पाठगत प्रश्न 2.2

1. रण कौशल का वर्णन कीजिए।
2. प्राचीन काल में सेना के मार्च के व्यूह रचना के तीन पहलुओं के बारे में लिखिए।

क्रियाकलाप 2.1

इंटरनेट की सहायता से भारतीय सेना द्वारा युद्ध में प्रयुक्त व्यूह रचना और रण कौशल को खोजकर लिखिए।

आपने क्या सीखा

- सेना अपनी इकाईयों को योजना के अनुसार युद्ध मैदान में तैनात करती है। इसका उद्देश्य राजा एवं मंत्रियों की आपसी मंत्रणा से तय की गयी नीति के आधार पर विजय प्राप्त करना होता है।
- व्यूह रचना और रण कौशल में अंतर को स्पष्ट किया गया है।
- प्राचीन समय के लोगों की नौसेना युद्ध पद्धति और हवाई जहाजों में जानकारी प्रशंसनीय थी।
- प्राचीन अभिलेखों से हवाई जहाज बनाने के तरीकों के बारे में पता चलता है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि इस यंत्र को शांति और युद्ध के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है। जहाज निर्माण की भी संपूर्ण जानकारी मिलती है। प्राचीन भारतीय लोगों ने नौसेना युद्ध पद्धति को पूर्ण रूप से आत्मसात कर लिया था।

पाठांत प्रश्न

1. नौसेना अध्यक्ष से आप क्या समझते हैं? इनकी क्या आवश्यकता थी?
2. चतुरंगबल को स्पष्ट कीजिए
3. अच्छी सेना की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. शिविर स्थल चुनने में किन तीन चीजों का ध्यान रखना चाहिए? स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. रथ, तलवारबाज और हाथी
2. नियमित सेना जिसमें सैनिक अपनी इच्छा से अपने देश के लिए लड़ते हैं।

2.2

1. व्यूह रचना से तात्पर्य उस योजना को बनाना तथा कार्यान्वित करना है जिसमें एक राजा के सभी संसाधनों का प्रयोग युद्ध व शांति के समय सदैव विजयी रहने के लिए किया जाता है।
2. रास्ता चुनना, रास्ते की सुरक्षा, मौसम और जलवायु।